विश्व महासागर दिवस

भूमिका :- 8 जून, 2009 से प्रत्येक वर्ष विश्व महासागर दिवस मनाया जा रहा है। जिसका उद्देश्य महासागरों के महत्व और इनकी तरफ से आने वाली चुनौतियों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करना है और साथ ही महासागरों से जुड़े विशेष पहलुओं जैसे- जैव- विविधता, खाद्य सुरक्षा, पारिस्थितिक संतुलन, जल संसाधनों का बेहिसाब उपयोग आदि को भी जन समुदायों के बीच उजागर करना है।

परीक्षा उपयोगी बिन्दु :-

- वर्ष 1992 में रियो डी जनेरियो में हुए 'पृथ्वी ग्रह' नामक सम्मेलन में इस दिवस को मनाने का प्रस्ताव रखा गया था और दिसंबर, 2008 में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा द्वारा इस दिवस को मनाये जाने की आधिकारिक घोषणा के बाद भारत में 8 जून 2009 से यह दिवस प्रत्येक वर्ष मनाया जाने लगा।
- विश्व महासागर दिवस पर हर साल वैश्विक स्तर पर कई कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते है, जिनसे महासागरों के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी मिलती है।
- भोजन के लिए कच्ची सामग्रियों और दवाओं के निर्माण में समुद्रों की विशेष भूमिका है। जिस कारण महासागरों में आने वाले अपशिष्ट पदार्थों जैसे मुख्य रूप से प्लास्टिक प्रदूषण के कारण महासागर धीरे-धीरे गंदे होते जा रहे है। जिस कारण समुद्र में रहने वाले जीवों के स्वास्थ्य पर भी गलत असर पड़ता है, समुद्री जीव अपशिष्ट पदार्थों को गलती से अपना भोजन समझकर उनका भक्षण कर लेते है, और इसके परिणाम स्वरूप उन्हें इससे होने वाली भयानक बीमारियों का सामना करना पड़ जाता है।

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक

भूमिका:- येल विश्वविद्यालय ने हाल ही में द्विवार्षिक पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक जारी किया। भारत ने 180 देशों में से 168 वी रैंक हासिल की। 2018 में, भारत ने 100 में से 27.6 स्कोर किया और 177 वीं रैंक हासिल की।

परीक्षा उपयोगी बिन्दु:-

- रैंकिंग बनाने के लिए लगभग 32 संकेतकों पर विचार किया गया है। साथ ही, सूचकांक ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय प्रदर्शन पर 10 साल का अवलोकन दिया है।
- इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत को अपने स्थिरता प्रयासों को दोगुना करने की आवश्यकता है। साथ ही, भारत को वायु और जल की गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के लिए अत्यंत प्राथमिकता के साथ स्थिरता के मुद्दों पर व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।
- अफगानिस्तान को छोड़कर सभी दक्षिण एशियाई देश भारत से आगे हैं। साथ ही, सतत विकास लक्ष्यों के मामले में भारत की रैंक भी कम है।
- भारत जलवायु परिवर्तन के मामले में 106वें स्थान पर और दक्षिण एशियाई क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है।
- जलवायु परिवर्तन में एक देश के प्रदर्शन का मूल्यांकन प्रति व्यक्ति ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन, ग्रीन हाउस गैस तीव्रता विकास दर, कार्बन डाइऑक्साइड में वृद्धि दर, उत्सर्जन वृद्धि दर, 4 ग्रीनहाउस गैसों की वृद्धि दर पर मूल्यांकन किया गया है।

भारत-चीन विवाद

भूमिका:- चीन और भारत के बीच मौजूदा आमने-सामने का संघर्ष पैंगोंग त्सो स्थल पर है। दोनों देशों ने मई के बाद से इस क्षेत्र में अपने सैनिकों को तैनात किया है।

परीक्षा उपयोगी बिन्दु :-

- भारत ने हाल ही में चंडीगढ़ और गुवाहाटी में डिन कमांड मुख्यालय स्थापित किया है और 90,000 सैनिकों को तैनात किया है। यह सैन्यकर्मी प्रशिक्षित पर्वतारोही हैं।
- सीमा में भारतीय सैनिकों की पहरेदारी में मुद्दा शुरू हुआ। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सीमा विवाद अनसुलझा है और कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों का अभी तक सीमांकन नहीं हुआ है।
- भारत और चीन के बाद विवादित क्षेत्र ज्यादातर भूमि में गुजरता है। हालांकि, पैंगोंग त्सो झील द्वितीय है जहां विवादित सीमा पानी से गुजरती है। झील का प्रमुख सामरिक महत्व नहीं है। हालांकि, झील चुशुल के रास्ते में है।
- तंजर पर्वत जिसे चांग चेनमो कहा जाता है, इसका आकार इथेलियों की भाँति है, जिन्हें 'फिंगर्स' कहा जाता है। भारत का दावा है कि LAC फिंगर 8 से शुरू होता है। दूसरी ओर, चीन का दावा है कि यह लाइन 2 से शुरू होता है। भारत भौतिक रूप से फिंगर 4 को नियंत्रित करता है।
- पैंगोंग त्सो झील एक लंबी गहरी संकीर्ण झील है जो लद्दाख क्षेत्र में 4,350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह झील 134 किमी लंबी और 5 किमी चौड़ी है। यह एक खारे पानी की झील है। यह सर्दियों में जम जाती है और पोलो और आइस स्केटिंग के लिए उचित है। यह सिंधु नदी के बेसिन का हिस्सा नहीं है। इसके अलावा, यह रामसर साइट नहीं है। हालांकि, रामसर कन्वेंशन के तहत इसकी पहचान करने की प्रक्रिया जारी है।

•BY:- Pankaj Badiya.